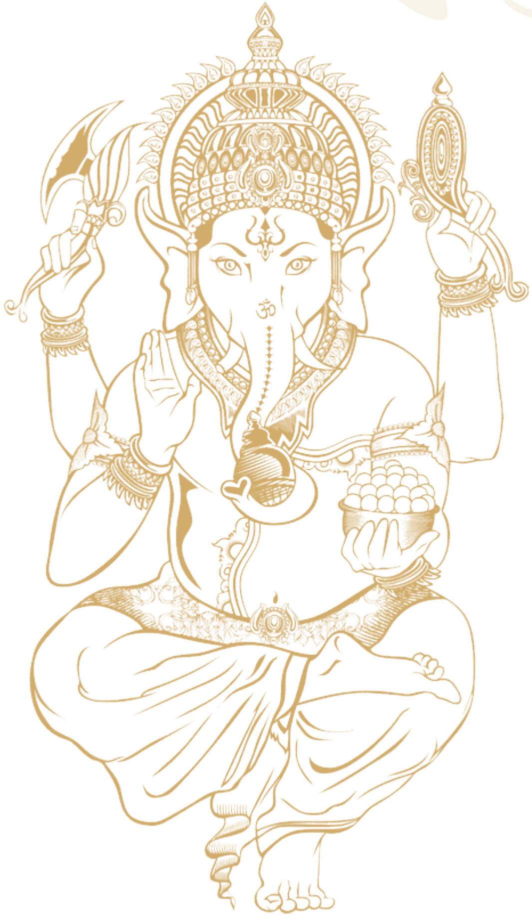

ABBHIPSA SIYA RANTA

06 Apr 2026

09:02 PM

Rohru

Model: Baby-Horoscope

Order No: 121879901

तिथि 06/04/2026 **समय** 21:02:00 **वार** सोमवार **स्थान** Rohru **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:32
अक्षांश 31:12:00 उत्तर **रेखांश** 77:45:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:19:00 घंटे

पंचांग		अवकहड़ा चक्र	
साम्पातिक काल	09:42:44 घं	गण	देव
वेलान्तर	00:02:27 घं	योनि	मृग
सूर्योदय	06:02:13 घं	नाड़ी	मध्य
सूर्यास्त	18:41:13 घं	वर्ण	विप्र
चैत्रादि संवत	2083	वश्य	कीटक
शक संवत	1948	वर्ग	सर्प
मास	वैशाख	युँजा	मध्य
पक्ष	कृष्ण	हंसक	जल
तिथि	5	जन्म नामाक्षर	ने-नैनी
नक्षत्र	अनुराधा	पाया(रा.-न.)	रजत-ताम्र
योग	व्यतिपात	होरा	चंद्र
करण	कौलव	चौघड़िया	रोग

विंशोत्तरी
शनि 4वर्ष 2मा 2दि
शनि
06/04/2026
09/06/2030

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	06/04/2026
राहु	27/11/2027
गुरु	09/06/2030

योगिनी
भ्रामरी 0वर्ष 10मा 16दि
भ्रामरी
06/04/2026
21/02/2027

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	06/04/2026
संकटा	23/06/2026
मंगला	02/08/2026
पिंगला	23/10/2026
धान्या	21/02/2027

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			23:13:40	तुला	विशाखा	1	गुरु	शनि	---	0:00			
सूर्य			22:36:53	मीन	रेवती	2	बुध	चंद्र	मित्र राशि	1.18	अमात्य	पितृ	सम्पत
चंद्र			13:44:13	वृश्चि	अनुराधा	4	शनि	राहु	नीच राशि	1.64	पुत्र	मातृ	जन्म
मंगल		अ	03:18:15	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	राहु	मित्र राशि	1.13	कलत्र	भ्रातृ	अतिमित्र
बुध			25:01:44	कुंभ	पू०भाद्रपद	2	गुरु	बुध	सम राशि	0.92	आत्मा	ज्ञाति	अतिमित्र
गुरु			21:58:07	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	शनि	शत्रु राशि	1.17	भ्रातृ	धन	अतिमित्र
शुक्र			14:21:32	मेष	भरणी	1	शुक्र	शुक्र	सम राशि	1.28	मातृ	कलत्र	क्षेम
शनि		अ	12:01:21	मीन	उ०भाद्रपद	3	शनि	चंद्र	सम राशि	0.94	ज्ञाति	आयु	जन्म
राहु	व		14:01:17	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	बुध	मित्र राशि		---	ज्ञान	मित्र
केतु	व		14:01:17	सिंह	पू०फाल्गुनी	1	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि		---	मोक्ष	क्षेम

लग्न-चलित

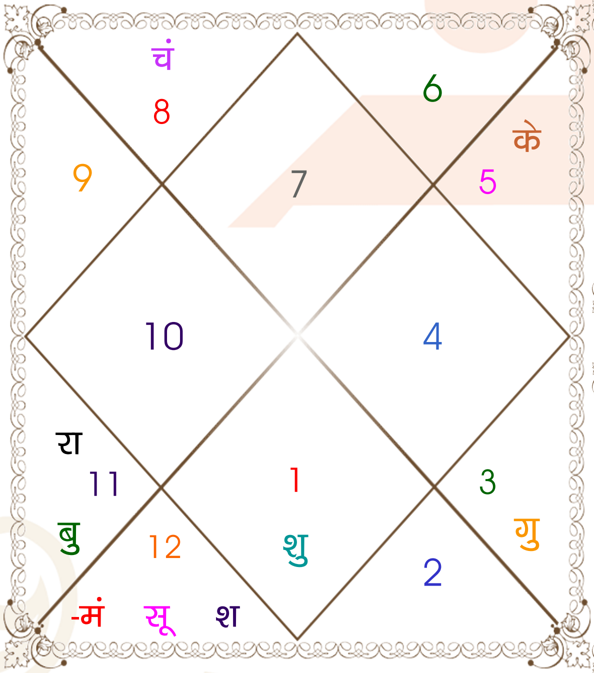

चन्द्र कुंडली

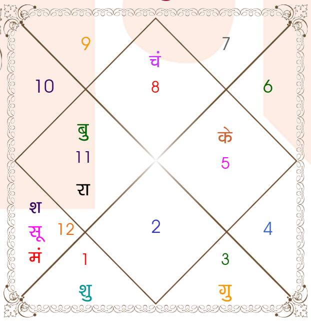

नवमांश कुंडली

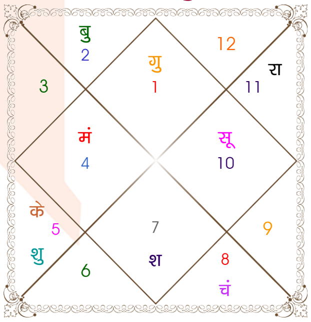

सर्वाष्टकवर्ग

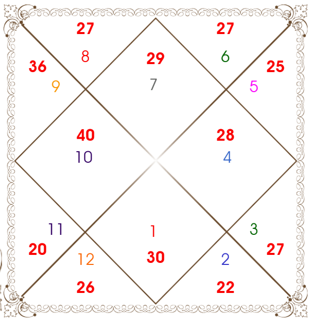

दशमांश कुंडली

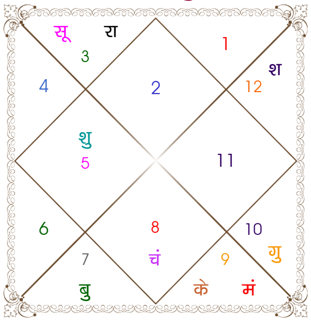

नक्षत्रफल

आप अनुराधा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी जन्मराशि वृश्चिक तथा राशि स्वामी मंगल होगा। नक्षत्र के अनुसार आपकी योनि मृग, गण देव, वर्ण विप्र, वर्ग सर्प तथा नाड़ी मध्य होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रथम अक्षर "ने" से प्रारम्भ होगा यथा नेहा आदि।

आप प्रारम्भ से ही उद्यमी प्रवृति की होंगी तथा अपने समस्त सांसारिक कार्यो को परिश्रम पूर्वक सम्पन्न करेंगी। इसी परिश्रम के फल स्वरूप आप अपने अधिकांश कार्यों में सफलता प्राप्त करेंगी। साथ ही घर से बाहर देश विदेश में भी आपका आवागमन होता रहेगा। अपने समीपस्थ सम्बन्धियों तथा बन्धुजनों के कल्याणकारी कार्यों को करने में आप सदैव तत्पर रहेंगी तथा यत्नपूर्वक उनको सहायता तथा सहयोग प्रदान करती रहेंगी। इससे आपका अर्न्तमन अत्यन्त उल्लसित रहेगा।

पुरुषार्थी प्रवासी च बन्धुकार्ये सदोद्यतः।
अनुराधोद्भवो लोके जायते हृष्टमानसः।।
जातक दीपिका

अर्थात् अनुराधा नक्षत्र का जातक पुरुषार्थी, प्रवासी, बन्धुओं के कार्य को करने में तत्पर तथा हमेशा प्रसन्नचित रहता है।

आप अपने सम्भाषण में अत्यन्त ही मृदु तथा प्रिय वाणी का उपयोग करेंगी जिससे सभी लोग आपसे प्रसन्न तथा प्रभावित रहेंगे। धन का आपके पास कभी भी अभाव नहीं रहेगा। इससे आप हमेशा सुसम्पन्न रहेंगी। साथ ही जीवन में समस्त सुखों का भी आप प्रसन्नतापूर्वक उपभोग करने में भी सौभाग्यशाली महिला सिद्ध होंगी। आप अपने समाज में एक ख्याति प्राप्त महिला होंगी तथा दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि व्याप्त रहेगी। इसके अतिरिक्त समाज से आपको पूर्ण सम्मान तथा आदर प्राप्त होगा एवं लोग आपको पूजनीया समझेंगे। साथ ही ऐश्वर्य से युक्त रहकर आप एक सामर्थ्यवान महिला भी होंगी।

मैत्रे सुप्रियवाग्धनी सुखरतः पूज्यो यशस्वी विभुः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् अनुराधा नक्षत्र का जातक प्रिय तथा सुन्दर वाणी बोलने वाला, धनवान, सुखसंसाधनों में लिप्त रहने वाला, पूज्य, यशस्वी तथा सामर्थ्यवान व्यक्ति होता है।

आप अपने जीवन में विपुल धन की स्वामिनी बनेंगी तथा अपने अधिकांश समय को घर से बाहर देश विदेश में ही व्यतीत करेंगी। कभी कभी अपने कार्य में व्यस्तता के कारण या अन्य कारणों से आपको भूख से भी व्याकुल रहना पड़ेगा। भ्रमण या घूमने फिरने की आप अत्यन्त शौकीन रहेंगी तथा समय समय पर पिकनिक या यात्रादि कार्यक्रमों का प्रसन्नचित से आयोजन करेंगी। इससे आपके मन को पूर्ण शान्ति प्राप्त होगी।

आढ्यो विदेशवासी क्षुधालुरटनोऽनुराधासु।।
बृहज्जातकम्

अर्थात अनुराधा नक्षत्र में उत्पन्न जातक धनवान, विदेश में वास करने वाला, भूख से व्याकुल रहने वाला तथा भ्रमण प्रिय होता है।

आपका शरीर तथा मुखमंडल हमेशा कान्ति से सुशोभित रहेगा। साथ ही आप एक उत्सव प्रिय महिला भी होंगी तथा समय समय पर पार्टी इत्यादि के आयोजन में रूचिशील रहेंगी तथा इनका आयोजन करती रहेंगी। आपके शत्रुवर्ग आपसे अत्यन्त ही भयभीत रहेंगे तथा आपभी उनके दमन करने में सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप नाना प्रकार की कलाओं को भी जानने वाली होंगी तथा अपने जीवन काल में विविध प्रकार के ऐश्वर्य एवं वैभव का उपभोग करेंगी।

सत्कान्तिकीर्तिश्च सदोत्सवः स्याज्जेतारिपूणां च कला प्रवीणः।
स्यात्संभवे यस्य किलानुराधा समृद्धिशाला विविधा च तस्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् अनुराधा नक्षत्र में उत्पन्न जातक कान्तिमान, यशस्वी, सर्वथा उत्सव करने वाला, शत्रुओं को पराजित करने वाला, अनेक कलाओं में निपुण तथा बहुत सम्पति का भोगी होता है।

आप रजत पाद में उत्पन्न हुई हैं। अतः जीवन में आप धन सम्पति से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगी तथा कभी भी इसके अभाव की अनुभूति नहीं करेंगी। साथ ही जीवन में विविध प्रकार के सुखसंसाधनों को आप अर्जित करेंगी एवं प्रसन्नता पूर्वक जीवन में इसका उपभोग करेंगी। आप एक बुद्धिमती महिला होंगी तथा दानशीलता के भाव से नित्य युक्त रहेंगी। साथ ही आप में सहनशीलता का भाव भी विद्यमान रहेगा। आपको अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में शीघ्र ही इच्छित सफलता प्राप्त होगी। शरीर से आप अत्यन्त ही कान्ति युक्त रहेंगी तथा आपकी मुखाकृति भी सुन्दर एवं दर्शनीय रहेगी। समाज में आप आदरणीय तथा श्रद्धेय महिला समझी जाएंगी। आप का परिवार भी विस्तृत रहेगा। आपकी वाणी अत्यन्त ही मधुर होगी तथा सभी लोग आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। आप सांसारिक सुखों का प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगी। विद्याध्ययन के क्षेत्र में आप पूर्ण रूप से सफल रहेंगी तथा एक विदुषी के रूप में ख्याति अर्जित करने में सफल होंगी। इसके अतिरिक्त आप प्रायः अल्प मात्रा में बोलना ही पसन्द करेंगी।

वृश्चिक राशि में उत्पन्न होने के कारण आप का वक्षस्थल विशाल तथा विस्तृत रहेगा। साथ ही शारीरिक वर्ण में तनिक श्यामलता दृष्टिगोचर होगी। आपके हाथ अथवा पैरों में मत्स्यचिन्ह भी विद्यमान रहेगा। साथ ही हाथ की सभी रेखाएं वज्र या पक्षी के आकार की रहेंगी। आप अपने माता पिता तथा गुरूजनों से संबंध रखेंगे। अतः इनसे आपको स्नेह तथा सहयोग भी प्राप्त होता रहेगा। बचपन में आप काफी बीमार भी रहेंगी। परन्तु बुद्धि से आप अत्यन्त तीक्ष्ण रहेंगी एवं बुद्धिचातुर्य तथा परिश्रम से राज्य या सरकार में किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को

प्राप्त करने में सफलता अर्जित करेंगी। आपको कठोर तथा क्रूर कर्म करना रूचिकर लगेगा। अतः सेना, पुलिस या सर्जरी विभाग में आप कार्यरत हो सकती है। यदा कदा आप स्वाभाविक दुष्टता का भी प्रदर्शन करेंगी जिससे अन्य लोग आपसे अप्रसन्न भी रहेंगे।

पृथुलनयनवक्षा वृहज्जङ्घोरूजानुः।
जनकगुरूवियुक्तः शैशवे व्याधितश्च।।
नरपति कुलपूज्यः पिंगलः क्रूरचेष्टो।
झषकुलिशखगाङ्कश्च छन्नपापोळलिजातः।।
बृहज्जातकम्

आपका उदर तथा मस्तक भी विस्तृत रहेगा। अन्य लोगों की वस्तुओं को देखकर आपके मन में लोलुपता का उदय होगा। आपका शरीर लावण्यता से भी युक्त रहेगा। आप ईश्वर एवं धर्म के प्रति भी अपनी आस्था प्रकट करेंगी। आपकी ठेड़ी तथा नाखून भी चोट ग्रस्त रहेंगे। धनैश्वर्य से आप हमेशा सुसम्पन्न रहेंगी। आप नाना प्रकार के कार्यों को करने में रत रहेंगी। बन्धधुवर्ग से आपको सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। आपका समस्त समाज में प्रभाव तथा प्रभुत्व स्थापित रहेगा तथा आपके पराक्रम को सभी लोग स्वीकार करेंगे। आपके स्वभाव में उग्रता भी रहेगी एवं यदा कदा सरकार से आपको आर्थिक हानि भी उठानी पड़ेगी। इसके अतिरिक्त अन्य जनों से भी आपके मित्रतापूर्ण संबंध स्थापित रहेंगे।

लुब्धो वृतोरूजङ्घः कठिनतरर्तनुर्नास्तिकः क्रूरचेष्टः।
चौरो बालो रूगार्तो हतचिबुकनखश्चारूनेत्रः समृद्धः।।
कर्मोद्युक्तः प्रदक्षः परयुवतिरतो बन्धुहीनः प्रमत्तः।
चण्डराजो हृतस्वः पृथुजठरशिरा कीटभे शीतरश्मौ।।
सारावली

आप एक धनाढ्य महिला होंगी तथा अपने विस्तृत परिवार के अतिरिक्त अन्य जनों का भी पालन पोषण करने में समर्थ रहेंगी। पुरूषों के सम्बन्ध में आप अत्यन्त ही भाग्यशाली सिद्ध होंगी तथा इनसे पूर्ण आदर सम्मान, सहयोग तथा लाभ अर्जित करेंगी। आप राजकीय सेवा में भी तत्पर रहेंगी लेकिन दूसरे लोगों के धन को प्राप्त करने की इच्छा आपके मन में हमेशा बनी रहेगी तथा इसके लिए आप सदैव प्रयत्नशील भी रहेंगी। आप दृढ प्रतिज्ञावाली महिला होंगी तथा जिस किसी भी कार्य को एक बार प्रारम्भ करेंगी उसे पूर्ण करके ही छोड़ेंगी। इसके अतिरिक्त साहस से भी आप परिपूर्ण रहेंगी तथा हमेशा किसी न किसी कार्य में रत रहेंगी।

बहुधनजनभोगी स्त्रीसु सौभाग्ययुक्तः।
पितुनयति मनस्वी राजसेवानुरक्तः।।
अभिलषति परार्थ नित्यमुद्योगयुक्तो।
दृढ़मतिरतिशूरो वृश्चिको यस्य राशिः।।
जातकदीपिका

कभी कभी आप समय व्यतीत करने के लिए या मनोरंजन के लिए जुआ आदि खेलने को भी उत्सुक रहेंगी परन्तु इससे आप को लाभ की अपेक्षा आर्थिक हानि ही अधिक होगी। आपमें स्वभाविक उग्रता विद्यमान रहेगी अतः अन्यजनों से आपका विवाद होता रहेगा। आप कभी कभी अपने आपको हृदय से अत्यन्त ही दुर्बल अनुभव करेंगी। इसके साथ ही शान्ति आपको कभी कभी ही प्राप्त होगी तथा अशान्त ही अधिक मात्रा में रहेंगी।

शशधरे हि सरीसृपगे नरो नृपदुरोदरजातधनक्षयः।
कलिरूचिर्विबलः खलमानसः कृशमनाः शमनापहतो भवेत।।
जातकाभरणम्

बाल्यकाल से ही आप भ्रमणप्रिय रहेंगी तथा इधर उधर भ्रमण करती रहेंगी। आपकी प्रवृति भी अभिमानी होगी जिसका आप समय समय पर अन्यजनों के समक्ष प्रदर्शन करती रहेंगी। अपने स्वजनों के प्रति भी आपके मन में प्रमे का भाव विद्यमान रहेगा तथा धनार्जन करने में आप अपूर्व साहस का परिचय देंगी एवं साहस पूर्वक धनार्जन करेंगी। कभी कभी आपनी निपुणता का परिचय भी देंगी।

बालप्रवासी क्रूरात्मा शूरः पिंगल लोचनः।
परदाररतो मानी निष्ठुरः स्वजने भवेत।।
साहसप्राप्तलक्ष्मीको जनन्यामपि दुष्ट धीः।
धूर्तश्चौरकलारम्भी वृश्चिके जायते नरः।।
मानसागरी

देवगण में उत्पन्न होने के कारण आपकी वाणी मधुर एवं प्रिय रहेगी। आपकी बुद्धि अत्यन्त ही सरलता से युक्त होगी। अपने विचारों को सुगमता पूर्वक प्रकट करना तथा अन्य की बातों को सरलता से ग्रहण करना आपकी प्रवृति होगी। आपको अल्प मात्रा में शुद्ध भोजन करना अत्यन्त ही प्रिय लगेगा। अन्य जनों के गुणों के विषय में आपको पूर्ण ज्ञान रहेगा तथा स्वयं भी श्रेष्ठ विद्वानों द्वारा प्रतिपादित उत्तम तथा सद्गुणों से सुसम्पन्न रहेंगी। इसके अतिरिक्त नाना प्रकार के धनैश्वर्य से सुशोभित रहेंगी तथा जीवन में आनन्दपूर्वक इनका उपभोग करेंगी।

आप देखने में सुन्दर एवं दर्शनीय होंगी तथा स्वभाव आपका दानशील रहेगा तथा अवसरानुकूल यत्नपूर्वक आप इस प्रवृति का अनुसरण करती रहेंगी। आप एक बुद्धिमान महिला होंगी तथा सादगी से जीवन व्यतीत करना पसन्द करेंगी। साथ ही समाज में एक महान विदुषी के रूप में भी आप आदरणीया रहेंगी।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा

वैभवशाली होता है।

मृग योनि में जन्म लेने के कारण आप स्वतंत्र प्रवृति की महिला होंगी तथा अपने समस्त कार्यकलापों को बिना किसी बाह्य हस्तक्षेप के करना पसन्द करेंगी। आपके स्वभाव में उग्रता का अभाव रहेगा तथा शांत प्रवृति से आप कार्य करेंगी। साथ ही आप अच्छे साधनों के द्वारा अपनी आजीविका का अर्जन करेंगी। आप सत्य वक्ता होंगी तथा जीवन में इसका अनुपालन करने के लिए सर्वदा यत्नशील रहेंगी। धर्म के प्रति भी आपकी पूर्ण निष्ठा तथा श्रद्धा रहेगी एवं देवता तथा बन्धुवर्ग के प्रति आपका पूर्ण स्नेह तथा सहयोग का भाव रहेगा तथा उनकी सहायता के लिए सर्वथा तत्पर रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप एक शूरवीर तथा साहसी महिला होंगी तथा विवादादि कार्यों में सर्वदा विजयी रहेंगी।

स्वच्छन्दः शान्तसद्वृतिः सत्यवान स्वजनप्रियः।
धार्मिको रणशूरश्च यो नरो मृगयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात मृग योनि का जातक स्वच्छन्द, शान्त प्रिय, अच्छी प्रकार की जीविका निर्वाह करने वाला एवं युद्ध क्षेत्र में शूरवीर होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा द्वितीय भाव में स्थित है। अतः आपके शुभ प्रभाव से उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आपके प्रति उनकी पूर्ण वात्सल्य भावना रहेगी तथा जीवन में विद्य ाध्ययन या धन संबंधी कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही उनसे आप अवसरानुकूल महत्वपूर्ण नैतिक शिक्षा भी ग्रहण करेंगी। इसके साथ ही वे आपको हार्दिक सहयोग देंगी। इस प्रकार आपके परस्पर संबंध भी अच्छे रहेंगे।

आप भी उनसे पूर्ण प्रभावित रहेंगी तथा उनके कथनानुसार ही अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगी। साथ ही जीवन में उनकी सेवा तथा वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से आप उनकी सहायता करती रहेंगी। अतः परस्पर मधुर संबंध एवं विश्वास होने के कारण आप आनन्दपूर्वक जीवन में उनका स्नेह प्राप्त करती रहेंगी।

आपके जन्म समय में सूर्य षष्ठ भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी अच्छी रहेगी। फिर भी यदा कदा शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको पूर्ण रूपेण अपना आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग प्रदान करते रहेंगे जिससे आपको कोई कष्ट न हो। साथ ही शत्रुवर्ग से भी आप का नित्य बचाव करते रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन भी नित्य करती रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर होंगे। परन्तु यदा कदा आपसी मतभेद भी रहेंगे जिससे कभी कभी आपसी संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु अल्प समय में ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। आप जीवन में अपनी ओर से उनका पूर्ण ध्यान रखेंगी एवं किसी भी प्रकार से वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी।

आपके जन्म समय में मंगल छठे भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों की आप प्रिय रहेंगी एवं उनसे सम्मान एवं स्नेह की नित्य आपको प्राप्ति होती रहेगी। उनका स्वास्थ्य भी ठीक ही रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति होती रहेगी। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको अपनी ओर से आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग प्रदान करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। सुख दुःख में वे पूर्ण रूपेण आपके साथ रहेंगे एवं शत्रु वर्ग से आपकी यत्नपूर्वक सुरक्षा करेंगे।

आपका भी उनके प्रति हार्दिक प्रेम रहेगा एवं उनके कल्याण संबंधी कार्यो को करने में तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण अल्प मात्रा में कटुता का भी आभास होगा लेकिन कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उनको पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करके अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगी।

आपके लिए आश्विन मास, प्रतिपदा, षष्ठी तथा एकादशी तिथियां, रेवती नक्षत्र, व्यतिपातयोग, गरकरण, शुक्रवार, प्रथम प्रहर तथा धनु राशि के चन्द्रमा सर्वदा अशुभ फल कारक रहेंगे। अतः आप 15 सितम्बर से 14 अक्टूबर के मध्य 1,6,11 तिथियों, रेवती नक्षत्र व्यतिपातयोग तथा गरकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को शुभारम्भ न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार, प्रथम प्रहर तथा धनुराशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य के प्रति पूर्ण रूपेण सचेत रहना चाहिए।

यदि आपके लिए समय ठीक नही चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में असफलता या अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में बाधाएं उत्पन्न हो रही हों तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव भगवान शिव की आराधना करनी चाहिए एवं नित्य शिवालय जाकर विल्वपत्र अर्पण करने चाहिए। साथ ही सोना, मूंगा, तांबा, रक्त वस्त्र, रक्त चन्दन गेहूं, मल्का आदि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए तथा सोमवार के उपवास भी रखने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फल भी कम होंगे। इसके अतिरिक्त मंगल के निम्न तांत्रीय मंत्र के कम से कम किसी योग्य विद्वान द्वारा 7000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपके शुभफलों में पूर्ण वृद्धि होगी।

ऊँ क्रां क्रीं क्रों सः भौमाय नमः।
मंत्र- ऊं हुं श्रीं भौमाय नमः।